प्राचीन अवन्तिका के विविध नाम : एक विश्लेषण

*डॉ. रविन्द्र सिंह **प्रो. अजय आचार्य

प्रस्तुत शोध–पत्र में ऐतिहासिक व सांस्कृतिक सन्दर्भो के आलोक में "अवन्तिका" के नामों की बहुलता एवं विविधता का विस्तृत विश्लेषण कर उसके पौराणिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्व को समझने का प्रयास किया गया है। एक ओर जहाँ वेदों, ब्राह्मण ग्रंथों, महाकाव्यों, पुराणों एवं लौकिक ग्रंथों में वर्णित कथानकों और विशेषताओं के कारण "अवन्तिका" के विविध नामों का धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व है, वहीं दूसरी ओर ऐतिहासिक सम्राटों व महापुरूषों की कर्मस्थली होने के कारण इसके ऐतिहासिक नामों का महत्व भी प्रकट होता है। "अवन्ति–जनपद" और उसकी राजधानी "उज्जयिनी" छठी सदी ई. पू. से लेकर मध्यकालीन भारतीय इतिहास तक विभिन्न राजवंशों के कार्य–काल में अपने अस्तित्व और महत्व को बरकरार रखने में सक्षम रही है। इसके प्रत्येक नाम की अपनी सार्थकता है, एक कथा है, एक परंपरा है, एक पहचान है और आज भी "युग युगीन उज्जयिनी" अपनी उन्हीं विशेषताओं को अपने आगोश में समेटे हुए है।

अवन्तिका का भौगोलिक स्वरूप

प्राचीन "अवन्तिका" (वर्तमान उज्जैन) के विविध नामों का विश्लेषण करने के पूर्व इसकी भौगोलिक स्थिति को समझना उचित होगा। प्राचीन अवन्ति–जनपद की राजधानी के रूप में प्रसिद्ध "उज्जैन" अथवा "उज्जयिनी" वर्तमान मध्यप्रदेश के दक्षिण पश्चिमवर्ती मालवा के पठारी भाग में चम्बल की सहायक नदी क्षिप्रा के पूर्वी पावन तट पर स्थित धार्मिक एवं सांस्कृतिक नगरी है। यह 23.182778 उत्तरी अक्षांश तथा 75.777222 पूर्वी देशांतर पर समुद्रतल से लगभग 491 मीटर (1610 फुट) ऊँचाई पर स्थित है।1 खगोल वैज्ञानिकों एवं भूगोल वेत्ताओं ने इसका वैज्ञानिक एवं प्राकृतिक महत्व स्वीकार किया है, क्योंकि प्राचीनकाल में उत्तर–दक्षिण की भूमध्य रेखा उज्जयिनी से ही होकर जाती है, जिसकी पुष्टि प्राचीन सूर्य सिद्धांत के इस श्लोक से भी होती है –

राक्षासालय दैवोक शैलयोर्मध्यसूमगा।
रोहीतकमवन्ती च यथा सन्निहितं सरः।।1/624।।

अर्थात् "राक्षासालय और देवगृह पर्वतों के मध्य में जो सूत्र रोहीतक और अवन्ती तथा कुरुक्षेत्रादि स्थान के निकट दिया गया है, वही मध्य रेखा है।" यही कारण है कि यह नगरी अति प्राचीन काल से ही कालगणना के लिए प्रमुख केन्द्र के रूप में मान्य रही है।2 यह पुरातन नगरी वर्तमान उज्जैन से दो मील उत्तर की ओर थी। ऐसा माना जाता है कि इसे "भूकम्प अथवा क्षिप्रा की असाधारण बाढ़ ने नष्ट कर दिया था। प्राचीन नगरी की भूमि पर प्राचीन नींवें आज भी दिखाई देती है और यहाँ उत्खनन में पुरात्तव की असंख्य वस्तुऐं, रत्न, मुद्रा, आभूषण तथा सिक्के प्राप्त हुए है।"3 जिनके अध्ययन के आधार पर इतिहासकारों एवं पुरात्तव विशेषज्ञों ने यह मत प्रतिपादित किया कि ईसा की दूसरी सदी तक अवन्ती–जनपद विद्यमान था और इसकी राजधानी के रूप में अवन्ती नगरी की पूर्ण प्रतिष्ठा थी। जिसकी पुष्टि शक नरेश रूददामन् के 150 ई. के जूनागढ़ शिलालेख में वर्णित "अवन्तिका" नाम से भी होती है।4 जिसमें कहा गया है कि अवन्तिका का शक वंश दक्षिण पश्चिमी भारत में सबसे शक्तिशाली एवं प्रसिद्ध था।

विविध नामों के आलोक में अवन्तिका प्राचीन ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक साहित्य के अनुशीलन से "अवन्तिका" नामावली की विस्तृत पृष्ठभूमि प्राप्त होती है जिसमें वर्णित "अवन्तिका" के विविध नामों का औचित्यपूर्वक वर्णन किया गया है। इन ग्रंथो में चारों वेद, पुराण विशेषकर स्कन्द पुराण, रामायण, महाभारत, पाणिनी की अष्टाध्यायी , कालिदास के ग्रंथ विशेषकर मेंघदूत एवं रघुवंशम्, वराहमिहिर की वृहत् संहिता, सोमदेव कृत कथासरित्सागर, कुवलयमाला, शूद्रक का मृच्छकटिकम्, बौद्धग्रंथ अंगुत्तर निकाय, जैन ग्रंथ भगवतीसूत्र एवं विदेशी लेखको में ह्वेनसांग, टालेमी आदि प्रमुख है। संदर्भित स्त्रोतों में अवन्तिका के नामों का विश्लेषण करने पर हम पाते हैं कि वास्तव में "अवन्तिका" विविध नामों के माध्यम से प्राचीनकाल से ही धार्मिक आर्थिक सांस्कृतिक एवं राजनैतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण नगरी रही है। यह क्षिप्रा के पावन तट पर हजारों वर्षो से बसी "अवन्तिका" नगरी न केवल भारत के मालवा क्षेत्र का गौरव थी अपितु इसका वैभव प्राचीन विश्व में आलोकित रहा है। इसे "मंगल ग्रह की जन्म स्थली" भी माना गया और भारतीय पंचाग की गणना का निर्धारण भी इसी स्थान के आधार किया जाना इसकी खगोलीय विशेषता को परिलक्षित करता है। यही कारण है कि जयपुर के राजा सवाई जयसिंह ने पाँच वेधशालाओं में से एक वेधशाला यहीं पर स्थापित की थी जो आज भी भारतीय ज्योतिषियों और पर्यटकों के लिये आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है।

सन्दर्भित स्त्रोतों में अवन्तिका के लिये प्रयुक्त किये गये सुप्रसिद्ध नामकरणों में प्रमुख है –

1. अवन्तिका,
2. उज्जयिनी, (उज्जाणी, उजाणी, उज्जैनी, उझैन ओझेन, ओझोनी, उद्यानिका),
3. कनकश्रृंगा,
4. पद्मावती,
5. अमरावती,
6. विशाला,
7. कुशस्थली,
8. कुमुद्वती,
9. प्रतिकल्पा व चूड़ामणि, मणिपूरक,
10. भोगवती और हिरण्यवती,
11. अन्य नाम – कुणाल नगरी, शिवपुरी, विक्रमपुरी, नन्दिनी, नवतेरी नगर, अवन्ति दक्खिनापथ।

अवन्तिका – अवन्ति शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम चारों वेदों में कई बार प्रयुक्त हुआ है, जिसके आधार पर विद्वान उससे इस नगरी की संयोजना करते है। यद्यपि यहाँ अवन्ती शब्द का प्रयोग

*सहायक प्राध्यापक–इतिहास, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, झाबुआ, म.प्र.
**अतिथि विद्वान–इतिहास, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, झाबुआ, म.प्र.

रक्षण के अर्थ में हुआ है। ब्राह्मण, आरण्यक ग्रंथ और पुराणों में भी अवन्तिका नाम आया है। परन्तु राज्य अथवा स्थान के नाम की दृष्टि से अवन्ती का प्रथम उल्लेख पाणिनी की अष्टाध्यायी में हुआ है।6 अतः वर्तमान उज्जैन को सर्वप्रथम जिस नाम से संबोधित किया गया वह नाम था अवन्ती । निश्चित ही यह नगर अति प्राचीन है। इतिहासकार मानते हैं कि माहिष्मती हैहय वंश के सम्राट कार्तिवीर्य अर्जुन के पुत्र आवन्ती के नाम पर इस जनपद और नगरी का नाम अवन्ति प्रचलित हुआ। इसी को व्याकरणाचार्यों ने राजा के अर्थ में "अवन्ति" और नगरी के अर्थ में "अवन्ती" शब्द को मान्य किया है।

बौद्धग्रंथ अंगुत्तर निकाय में वर्णित छठी शताब्दी ई. पू. के सोलह महाजनपदों में चार शक्तिशाली राजतन्त्रों में "अवन्ती महाजनपद" का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि इसकी सीमा उत्तरी और दक्षिणी भाग के रूप में विभक्त थी। उत्तरी भाग की सीमा में वर्तमान मालवा और दक्षिणी भाग में अनूप अथवा निमाड़ नार्मद प्रदेश था। उत्तारी भाग की राजधानी अवन्ती तथा दक्षिणी भाग की राजधानी माहिष्मती (आधुनिक महेश्वर) थी। अवन्ती का राजा चण्डप्रद्योत मगध के बिम्बिसार और अजातशत्रु के समकालीन था। मगध नरेश शिशुनाग ने अवन्ती को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया था। अवन्ती बौद्ध धर्म का प्रसिद्ध केन्द्र था। अवन्ती राज्य का पर्याप्त आर्थिक महत्व था, क्योकि अनेक व्यापारिक मार्ग उस प्रदेश से गुजरते थे।7 महाकवि कालिदास की रचनाओं में "अवन्ती" का उल्लेख मिलता है। चीनी यात्री युवानच्वांग के वर्णन से ज्ञात होता है कि अवन्ती या उज्जयिनी का राज्य उस समय (ई. 615 – 630) मालवा राज्य से अलग था और यहाँ एक स्वतंत्र राजा शासन करता था।8 अवन्ती नाम का उल्लेख अग्निपुराण गरूड, शिव, लिंग, मार्कण्डेय, वामन, मत्स्य, भविष्य भागवत पद्म आदि पुराणो में भी कई बार किया गया है।9 यानि अविन्तका शब्द का प्रयोग एक जनपद के रुप मेँ एवं एक नगरी के रुप में प्रमुख रुप से किया गया है।

उज्जयिनी – (उज्जाणी या उजाणी, उज्जैनी, उड्डैन, ओझेनी, ओझोनी, उद्यानिका) – प्राचीन भारतीय साहित्य में उज्जयिनी का उल्लेख उज्जैनी, उज्जाणी, उजाणी, उड्डैन, ओझेन आदि के रूप में भी प्रयुक्त किया गया है। "पेरिप्लस ऑफ दि"ऐरिथ्रियन सी" (Periplus of the Erythrean Sea) नामक पुस्तक का अज्ञात नाम लेखक, जो प्रथम शताब्दी ईसवी का एक यूनानी नाविक था, उज्जयिनी का उल्लेख ओझेनी या "ओझोनी" (Ozene) के रुप में करता है और उसे भूतपूर्व राजधानी कहता है जो शिप्रा (क्षिप्रा) नदी के तट पर बसी थी।10

इस नगरी के दूसरे नाम का वर्णन प्रमुख रूप से कालिदास के ग्रंथ मेंघदूतम् काव्य में अत्यन्त ही मनमोहक रूप से किया गया है। उसमें "उज्जैनी" को स्वर्ण का एक कांतियुक्त खण्ड स्वीकार किया है जिसका आनन्द भोगने के लिये देवता भी स्वर्ग से अवतरित हो जाते हैं। उसके विवरण से ज्ञात होता है कि यहाँ शैव धर्म के मानने वालों का बाहुल्य था।11 महाकाल के शिवालय के लिये "उज्जयिनी" आज भी विख्यात है। रामायण के किष्किंधा कांड (42,14) में उज्जियनी और अवन्ती को अलग–अलग नगरी के रूप में बताया गया है। स्कन्द पुराण के "अवन्तिका आंवन्त्ये खण्ड" में भगवान शिव के द्वारा त्रिपुरासुर के वध का उल्लेख करते हुए त्रिपुरासुर का उत्कर्ष पूर्वक जीता गया प्रदेश होने के कारण इसे "उज्जयिनी" नाम से उद्धृत किया गया है। उज्जयिनी शब्द का अर्थ उत्कर्ष पूर्ण विजय है। अतः इस नगरी का यह नाम अधिक प्रचलित हो गया।12

हर्ष के दरबारी कवि बाणभट्ट ने कादम्बरी में "उज्जयिनी" का वर्णन एक समृद्ध नगर के रूप में किया है। उसके अनुसार यह नगर एक गहरी खाई तथा आकार से सुरक्षित था। उसमें कई चित्रशालाएँ विद्यमान थी जिनमें देवताओं, राक्षसों, गन्धर्वो के चित्र उकेरे गये थे।13 विदेशी यात्रिओं में चीनी यात्री फाह्यान, हवेनसांग तथा इत्सिंग, अरबी इतिहासकार अलबरूनी , मुगल इतिहासकार फरिश्ता , अुबुल फ़जल की आईने अकबरी,, तुजुके जहाँगीरी तथा विदेशी दूत सर टामस रो की कलम से भी उज्जयिनी बच नहीं पायी है। इन विदेशी पर्यटकों एवं लेखकों ने उज्जयिनी के सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक और कलात्मक जीवन के विविध पक्षों का समावेश अपने संस्मरणों में विस्तारपूर्वक किया है। स्पष्ट है कि भारतीय इतिहास में उज्जयिनी की सांस्कृतिक विरासत हर युग में सबको अपनी ओर आकर्षित करने की खूबी रखती रही है।

लोक परम्परा एवं धर्मशास्त्रों में सात पवित्र एवं मोक्षदायिका नगरियों में उज्जैन (उज्जैयिनी) को शामिल किया जाना इसके अघ्यात्मिक प्रभा मण्डल को अभिव्यक्त करता है। धर्मशास्त्रों में क्षिप्रा में जल स्नान को सभी पापों का क्षय करने वाला कहा है। इसलिये प्रति 12 वर्षो में कुंभ मेंले (सिंहस्थ मेंले) में लाखों श्रद्धालु क्षिप्रा के जल में आज भी स्नान करके अपनी आस्था को व्यक्त करते है।

मालवा की एक परम्परा के अनुसार वर्षा अभाव में गाँव या नगर के लोगों द्वारा बस्ती से बाहर जाकर खेत, नदी कुएँ, तालाब के तट अथवा उद्यान में जाकर भोजन बनाने एवं वर्षा के लिये इन्द्रदेव की पूजा करने की प्रथा को "उज्जैनी" कहा जाता है। अर्थात् इस निश्चित दिन गाँव में धुआँ नहीं किया जाता है। मालवा के लोक जीवन में इसके प्राकृत नाम का प्रयोग पर्यटन स्थली के रूप में भी "उज्जाणिआ," "उजाणी," "उज्जैनी" आदि के रुप में किया गया है। गुजराती भाषा में पिकनिक या गोठ को "उजाणी" कहते हैं। "उजाणिआ" शब्द को राजा भोज ने अपनी पुस्तक श्रृंगारमंजरी कथा (पृष्ठ 25) में संस्कृत–रूपान्तरित कर उद्यानिका (उद्यान), बगीचा कहा है। उज्जैन में उद्यानों की बहुलता का उल्लेख शूद्रक, कालिदास, माघ, श्यामिलक, बाणभट्ट, सोमेंश्वर सूरि, महाराजा भोज आदि रचनाकारों ने भी किया है।14 इससे स्पष्ट है कि प्राचीनकाल में उज्जयिनी को लोग उसकी ख़ास विशेषताओं के कारण भिन्न–भिन्न नामों से संबोधित करते थे।

कनकश्रृंगा – स्कंद पुराण के अनुसार ब्रह्मा ने इस नगरी को कनक वर्ण के श्रृंगा वाली कहा था। कनक श्रृंगा से तात्पर्य "सुवर्णमय शिखरों वाली" है। अर्थात् यहाँ के भवनों के कंगूरे बहुमूल्य रत्नों, मुक्ता–मणियों तथा सुवर्ण कलश से मंडित सुनहले शिखरों से सुशोभित होने से इसे कनकश्रृंगा के नाम से पुकारा गया। सूर्य की नवोदित लालिमा की भाँति जिस नगरी में स्वयं भगवान महाकाल के भवनों की अद्भुत् आभा स्वर्ण से भी श्रेष्ठ चमक बिखेरती हो, उसे कनकश्रृंगा कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगा।

पद्मावती – स्कंदपुराण के अवन्त्ये अध्याय (44/33–34) में यहाँ पद्मा अर्थात लक्ष्मी का वास होने से इसे "पद्मावती" माना गया है। खजुराहो के वैद्यनाथ मंदिर शिलालेख के श्लोक 6 एवं अन्य श्लोकों में कहा गया है कि पद्मवंश द्वारा स्थापित होने से यह नगरी "पद्मावती" कहलायी। शिलालेख के अनुसार "हिमालय के शिखर की ऊँचाई वाले उत्तम महल रूपी कमलों वाली वह पहले भव्य और अपूर्ण रचना से युक्त पद्मावती की

नगरी थी। अर्थात् यहाँ पद्म (कमल, धन) की बहुलता थी। इसलिये भी यह पद्मावती कहलायी। "पद्मावती" नाम की पृष्ठभूमि चाहे जो रही, इतना तो सुविदित है कि धन–धान्य से सम्पन्न यह नगरी व्यापार– वाणिज्य का प्रसिद्ध केन्द्र प्राचीन काल से ही रही है।

अमरावती – स्कन्दपुराण के अवन्त्ये अध्याय (46/6–17, 22) में महर्षि कश्यप एवं समस्त देवतागणों के निवास के कारण यह नगरी "अमरावती" के नाम से प्रसिद्ध हुई। ऐसा भी माना जाता है कि यह नगरी स्वर्ग का चमकदार खण्ड होने से अमरावती कहलायी।

विशाला – स्कंदपुराण के अवन्त्ये अध्याय (47/15, 39–40) के अनुसार भगवान शिव द्वारा पार्वती की इच्छानुसार विशाल एवं वैभवयुक्त भवनों के निर्माण के कारण यह "विशाला" के नाम से प्रसिद्ध हुई। कालिदास के मेंघदूत में भी "श्रीविशालां विशालायमं"। अर्थात् आकार एवं श्रीसंपन्नता में विशाल होने से यह नगरी "विशाला" कहलायी।15

कुशस्थली – स्कंदपुराण के अनुसार कुश नामक पवित्र घास से आच्छादित होने के कारण इसका नाम कुशस्थली पड़ा। जहाँ पर भगवान विष्णु,, ऋषि – मुनियों और ब्राम्हणों के द्वारा आसन लगाये जाने की चर्चा की गई है। धार्मिक दृष्टि से आज भी यहाँ साधुओं – तान्त्रिकों, भक्तों द्वारा आसन लगाये जाने की परम्परा है जो इस नामकरण के समतुल्य प्रतीत होता है।

कुमुदनी – स्कंदपुराण के अनुसार लोमश ऋषि द्वारा यहाँ कुमुदनी और कमलों की विपुलता को देखकर इसे "कुमुदनी" नाम दिया गया। ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ प्राचीन शासकों की नगर निकाय जैसी स्थानीय प्रशासनिक इकाई संरचनात्मकता और प्राकृतिक सौन्दर्य की ओर विशेष ध्यान देती रही है, तभी तो यहाँ उद्यानों की बहुलता, कमल फूलों की तड़ागों में उपस्थिति एवं भव्य भवनों की अपनी विशेषता पुराणादि साहित्य में वर्णित होती रही है।

प्रतिकल्पा – पुराणों के अनुसार यह नगरी बार बार उजड़ने और बनने के कारण प्रतिकल्पा के नाम से विख्यात हुई जहाँ ब्रह्मा, विष्णु, महेश का निवास बताया गया है। यह नाम इसलिये भी सार्थक हुआ कि प्रत्येक कल्प में इसके अलग–अलग नाम रखे गये। 6 कल्पों में इसके कमशः ये 6 नाम बने – स्वर्णश्रृंगा, कुशस्थली, अवन्तिका, अमरावती, चूड़ामणि तथा पद्मावती। सर्वश्रेष्ठ होने से यह चूड़ामणि (मणिपूरक) कहलायी थी। प्रतिकल्पा नाम से यह भी स्पष्ट होता है कि अवन्तिका अथवा उज्जयिनी नाम पड़ने से पहले भी यह नगरी अपने अस्तिव में थी।

भोगवती और हिरण्यवती – सोमदेव के कथासरित्सागर में चारों युगों के अन्तर्गत भोगवती और हिरण्यवती नामों का उल्लेख किया गया है। पुराणों में इसे स्वर्ण की बहुलता और समस्त प्रकार के भोगों से युक्त होने के कारण ही इसे भोगवती और हिरण्यवती कहा गया है। इसे भोगवती कहा जाना अवन्तिका के समृद्ध जीवन शैली के उपभोग का सूचक है।

स्त्रोतों में अन्य नाम – अवन्तिका को उपरोक्त सन्दर्भित स्त्रोतों में अन्य कई नामों से भी सम्बोधित किया जाकर उसकी अलग पहचान स्थापित की गयी है। कुवलय माला नामक ग्रंथ में इसे कुणाल नगरी, भगवान शिव के निवास के कारण शिवनगरी, महाराजा विकमादित्य की राजधानी होने के कारण विकमपुरी, सबको आनंद प्रदान करने देने से नन्दिनी, 9x13 कोस का इसका क्षेत्रफल होने के कारण नवतेरी, पश्चिमी मालवा में स्थित होने के कारण अपर मालवा, पुष्पों की अधिकता के कारण पुष्पकरण्डिनी (फूलों की डण्डी) आदि नामों से जाना गया है। पालि ग्रंथों, कौटिल्य के अर्थशास्त्र तथा कुछ अन्य स्त्रोतों ने दक्षिणापथ के व्यापारिक मार्ग पर स्थित होने के कारण इसे "अवन्ति दक्खिनापथे" या "दक्खिनापथे अवन्ति रथ्ये" आदि नामों से संबोधित किया गया है।

अतः कहा जा सकता है कि जिस नगरी का अतीत अत्यन्त समृद्ध एवं उज्जवल रहा हो, जहाँ कालों के काल महाकाल का निवास हो, जहाँ सिद्ध शक्ति पीठ की महिमा हो, जहाँ कि व्यापक सांस्कृतिक गरिमा सर्वश्रेष्ठ हो, जो भगवान श्री कृष्ण की शिक्षा स्थली व राजा भर्तृहरि एवं मच्छेन्द्रनाथ की योग पीठ तथा तपो भूमि रही हो, जो भूगोल एवं खगोलवेत्ताओं को अपनी ओर आकर्षित करती रही हो, जो राजा सवाई जय सिंह, महाद जी शिंदे की स्मृतियों के प्रभा मण्डल से दैदीप्यमान रही हो, जो चण्डप्रद्योत एवं वासवदता, अशोक महान, मुंज परमार, नवसाहसांक और राजा भोज व विकमादित्य की न्यायप्रियता, स्नेह एवं महानता की साक्षी रही हो, जो महाकवि कालिदास, माघ, अमर, भारवि और पद्मगुप्त की कीर्ति व विद्वता से सुवासित रही हो, उस नगरी के गुण गौरव और समय–समय पर घटित ऐतिहासिक, सांस्कृतिक घटनाओं, शुभ–कार्यो एवं वहाँ पर संपादित होने वाले विविध क्रियकलापों के कारण इस नगरी को विविध नामों से संबोधित करना सहज स्वाभाविक ही था। इसीलिए इसे अवन्तिका, अवन्तिकापुरी, अवन्तिका नगरी, अवन्तिकापुर, विशाला, कनकश्रृंगा, उज्जयिनी, उज्जाणी या उजाणी, उज्जैनी, उझैनी ओझोनी, उद्यानिका उज्जैन, पद्मावती, कुशस्थली, महाकाल की नगरी आदि नामों से सुशोभित किया जाना उचित ही प्रतीत होता है।

सन्दर्भ ग्रंथ :

1. http:// en.wikipedia.org / wiki / ujjain
2. डॉ. भगवती लाल राजपुरोहित, उज्जैन और महाकाल,प्राच्य निकेतन,बृजमोहन बिड़ला रिसर्च सेन्टर,उज्जैन (म.प्र.), प्रथम संस्करण,1992, पृष्ठ 5.
3. डॉ. एच. सी. राय चौधरी, कृत आलेख," उज्जयिनी युग–युगीन", भारतीय इतिहास संकलन समिति, मध्यभारत, 1991, विक्रम सम्वत् 2048, पृष्ठ 6.
4. झा–बन्धु ,अभिलेखमाला, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, चतुर्थ संस्करण, 1983, पृष्ठ 9.
5. राजबली पाण्डेय, भारतीय पुरालिपि, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1998, पृष्ठ 178.
6. पाणिनी,, अष्टाध्यायी,, सूत्र 4/1/176 यथा–" स्त्रियामवन्ति–कुरुम्यश्च" ।
7. अंगुत्तर निकाय, आगमोदय समिति, सूरत।
8. हुकुम चन्द जैन, भारतीय ऐतिहासिक स्थल कोश, जैन प्रकाशन मंदिर, जयपुर, प्रथम संस्करण, 2004, पृष्ठ 14.
9. श्याम सुन्दर निगम, मालव की ह्रदय स्थली अवन्तिका, विशाला प्रकाशन, उज्जैन, प्रथ्म संस्करण 1968, पृष्ठ 50.
10. हुकुम चन्द जैन, पूर्वोक्त, पृष्ठ 25.
11. कालिदास, मेंघदूत, 1/34–37, चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय, वाराणसी।
12. मुरलीधर सिंह, उज्जयिनी का विहंगाँवलोकन, श्री कालिदास मॉण्टसरी हायर सैकेण्डरी स्कूल, बम्बाखाना, उज्जैन, प्रथम संस्करण 1977, पृष्ठ 4.
13. बाणभट्ट –कादम्बरी , निर्णय सागर प्रेस, बम्बई एवं हुकुम चन्द जैन, पूर्वोक्त, पृष्ठ 26.
14. डॉ. भगवती लाल राजपुरोहित, पूर्वोक्त, पृष्ठ 9,10.
15. कालिदास, पूर्वोक्त।